ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 36 | 17 से 23 दिसम्बर, 2015 | दयानन्दाब्द 192 | सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 | मा. शु. 06

गौहत्या के विरूद्ध तथा कांग्रेस नेता श्री मल्लिकार्जुन खड़गे के विवादित बयान को लेकर सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में दिल्ली के जन्तर-मन्तर पर

आर्य समाज ने किया जोरदार प्रदर्शन

दिल्ली तथा आस-पास के क्षेत्रों से हजारों की संख्या में उपस्थित आर्यजनों ने दिखाई आर्य समाज की ताकत

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की सिंह गर्जना

सारे देश के लिए गौहत्या बन्दी कानून शीघ्र बनाओ नहीं तो राष्ट्रव्यापी आन्दोलन किया जायेगा

कांग्रेसी नेता श्री मल्लिकार्जुन खड़गे के आर्यों के सम्बन्ध में अत्यन्त विवादित बयान कि "आर्य बाहर से आये हैं तथा वे यहाँ के मूल निवासी नहीं हैं एवं गौ–हत्या अविलम्ब सारे देश में बन्द करवाने हेतु केन्द्रीय कानून बनाने के सम्बन्ध में विश्व की आर्य समाजों की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिल्ली के जन्तर–मन्तर रोड पर एक विशाल धरना तथा प्रदर्शन का भव्य आयोजन किया गया। इस ऐतिहासिक धरना तथा प्रदर्शन के आयोजन की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने की। इस विशाल धरने तथा प्रदर्शन में दिल्ली के अतिरिक्त गुड़गांव, फरीदाबाद, रोहतक, मेरठ, गाजियाबाद, हापुड़, मोदीनगर, करनाल, सोनीपत, जीन्द, रोहतक, बल्लभगढ़, नोएडा, अलीगढ़, बागपत, जोधपुर तथा आस–पास के क्षेत्रों से हजारों व्यक्तियों ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वानों, नेताओं तथा वरिष्ठ कार्यकर्ताओं एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों सहित हजारों की संख्या में आर्य समाजों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। मंच पर मुख्य रूप से विश्वविख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी, पं. माया प्रकाश त्यागी–कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा, प्रो. विट्ठलराव आर्य, महामंत्री सार्वदेशिक सभा तथा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश, वैद्य इन्द्रदेव जी उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री–उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, डॉ. अनिल आर्य –उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री रामसिंह आर्य–जोधपुर–उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री मधुर प्रकाश शास्त्री–उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री देवेन्द्र पाल वर्मा प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र., स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र., स्वामी रामवेश जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, मूर्धन्य विद्वान तथा संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी, आचार्य महावीर मीमांसक, स्वामी विश्वानन्द जी–मथुरा, श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री महेन्द्र भाई महामंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, आचार्य हरिदत्त–गुरुकुल लाढ़ौत, श्री विरजानन्द–महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, प्रो. श्योताज सिंह–महामंत्री बंधुआ मुक्ति मोर्चा, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या तथा बहन प्रवेश आर्या, वैदिक विद्वान डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, श्री मामचन्द्र रेवाड़िया, श्री विकास अग्रवाल–प्रधान जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, हापुड़, चौ. राजेन्द्र सिंह बीसला–पूर्व विधायक फरीदाबाद, श्री वेद प्रकाश भल्ला, आचार्य अमरदेव शास्त्री वैदिक विद्वान, श्री प्रवीण आर्य, ब्र. रामफल–प्रधान सार्व. आर्य युवक परिषद्, उत्तर प्रदेश, श्री सुनील जी–नोएडा, श्री

अगले पृष्ठ पर जारी

आर्य समाज ने किया जोरदार प्रदर्शन

राजवीर वशिष्ठ, स्वामी अखिलानन्द–पूठ, स्वामी कमलानन्द–चेकस्लोवाकिया, श्री श्रद्धानन्द शर्मा–प्रधान आर्य समाज राजनगर गाजियाबाद, श्री रामकुमार आर्य–प्रान्तीय प्रभारी केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली, श्री चाँदमल, श्री भंवरलाल आर्य, श्री नारायण सिंह 'सर', श्री शिवप्रकाश सोनी, श्री मदन गोपाल आर्य–जोधपुर, श्री हरदेव आर्य–शिवगंज (राज.), आचार्य सन्तराम आर्य, श्री बाबूराम शर्मा 'विभाकर', वी. पी. अरोड़ा, आचार्य धूम सिंह शास्त्री, आचार्य ज्ञानवोध शास्त्री, श्री गोविन्दराम आर्य (मध्य प्रदेश), आचार्य भानु प्रकाश–इंदौर, श्री रणवीर शास्त्री–बवाना, श्री रामपाल शास्त्री–मानव सेवा संस्थान, श्री रामपाल सिंह (हरियाणा), कै. अशोक गुलाटी , श्री सत्येन्द्र मोहन कुमार–प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा करनाल, श्री कुलभूषण आर्य–बल्लभगढ़, श्री रामनिवास शास्त्री–गाजियाबाद, श्री तेजपाल आर्य–मंत्री जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद, स्वामी सत्यवेश–संन्यास आश्रम गाजियाबाद, स्वामी ब्रह्मानन्द, स्वामी राजेश्वरानन्द, स्वामी सम्पूर्णानन्द, स्वामी शिवानन्द, श्री आनन्द प्रकाश आर्य–आर्य समाज हापुड़, श्रीमती गायत्री मीणा–प्रधाना स्त्री आर्य समाज गुरुकुल नोएडा, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, श्री नरेन्द्र आर्य महामंत्री आर्य पुरोहित सभा दिल्ली, श्री ओम प्रकाश आर्य–साधु आश्रम अलीगढ़ आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा इस विशाल धरने के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित आर्य प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि गौहत्या के विरूद्ध आर्य समाज की यह लड़ाई बहुत पुरानी है। लेकिन किसी भी सरकार ने इस मुददे को गम्भीरता से नहीं लिया। लेकिन ये विशाल धरना इस मुद्दे को नये सिरे से आर्य समाज ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावशाली आन्दोलन पुनः चलाने के लिए आयोजित किया है। स्वामी जी ने गाय के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जो गाय हमें जीवनभर दूध देती है। दूध, दही, घी से हमें स्वस्थ व पुष्ट बनाती है, जिसका गोबर और मूत्र हजारों असाध्य बीमारियों को दूर करता है और मरने के बाद भी हमारे कल्याण के लिए अंग–प्रत्यंग समर्पित कर देती है उस गौ माता के मांस को खाना कितना बड़ा जघन्य अपराध है। महर्षि दयानन्द जी ने 19वीं शताब्दी में गौकरूणानिधि लिखी और उसके माध्यम से गऊ आदि समस्त मूक पशु–पक्षियों की हत्या पर प्रभावशाली दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। परन्तु गऊ माता के विलाप को कोई नहीं सुन रहा। उन्होंने कहा कि अब पूरे देश में पूर्ण रूप से गौहत्या बन्दी तथा मॉंस निर्यात पर रोक को लेकर आर–पार की लड़ाई लड़ने के लिए हम सब यहाँ एकत्रित हुए हैं। उन्होंने कहा कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है और गाय जिसे हम माँ का दर्जा देते हैं वह भारतीय अर्थव्यवस्था की मूलाधार रही है। आज सारे देश में गौवंश को जड़ से समाप्त करने का षड्यन्त्र बड़े पैमाने पर चलाया जा रहा है। स्वामी जी ने कहा कि आज स्थिति यह हो गई है कि गौरक्षक तो सोये पड़े हैं और गौहत्यारे अपनी विनाशलीला खुले रूप में वैध तथा अवैध रूप से चला रहे हैं। अब आर्य समाज चुप नहीं बैठेगा और गौहत्या के इस कलंक को देश से मिटाकर ही रहेगा। आज गौ–माता का जितना तिरस्कार हो रहा है वह दिल को झकझोर देने वाला है। स्वामी जी ने देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को भी याद दिलाया कि उन्होंने चुनावी घोषणाओं में कई बार गौहत्याबन्दी तथा गौमाँस निर्यात की कड़े शब्दों में निन्दा की थी तथा इसको बन्द कराने का आश्वासन दिया था। लेकिन आज इतना समय बीत जाने के बाद भी उन्होंने इस सम्बन्ध में कोई कदम नहीं उठाया है। स्वामी जी ने चेतावनी देते हुए कहा कि अब वे अपने उस वायदे को पूर्ण करें और सारे देश में गौहत्याबन्दी की राष्ट्रीय नीति घोषित करके अपने वायदे को पूरा करें।

स्वामी जी ने कांग्रेस नेता श्री मल्लिकार्जुन खड़गे के उस वक्तव्य की कड़े शब्दों में भर्त्सना की जिसमें उन्होंने कहा था कि "आर्य लोग बाहर से आये थे, वे इस देश के मूल निवासी नहीं हैं" स्वामी आर्यवेश ने कहा कि श्री खड़गे अपने विवादित बयान को वापस लें और सार्वजनिक रूप से माफी मांगें यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया तो देशभर में लाखों आर्यजन उनके विरुद्ध अपना रोष व्यक्त करेंगे। स्वामी जी ने कांग्रेस की अध्यक्ष सोनिया अगले पृष्ठ पर जारी है

देश के महामहिम राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री जी को सौंपे गये ज्ञापन पत्र की प्रतिलिपि

विषय : पूरे देश में गौहत्या बन्दी एवं गौमाँस निर्यात पर पूर्ण रूप से प्रतिबन्ध लगाने के सम्बन्ध में ज्ञापन पत्र।

मान्यवर महोदय,

१. निवेदन है कि भारतवर्ष में गाय का महत्त्व प्राचीनकाल से ही रहा है और इसे गौमाता के रूप में देशवासी मानते रहे हैं। हमारे देश में अंग्रेजों के समय गाय काटने के केवल कुछ संख्या में कत्लखाने थे, जो कि स्वतंत्रता के पश्चात् इनकी संख्या में दिन–प्रतिदिन वृद्धि होती गई और इस समय तक पूरे देश में इनकी संख्या लगभग ५ हजार बड़े कत्लखानों के रूप में पहुंच गई है जबकि छोटे कत्लखानों की संख्या लगभग ५० हजार तक पहुंच चुकी है। भारत के संविधान की धारा–४८ में लिखा है कि गाय और गौवंश का वध सर्वदा बन्द होना चाहिए तथा जो पशु दूध तथा खेती के काम आते हैं उन पशुओं का भी वध नहीं होना चाहिए। परन्तु यह कानून कुछ लचीला होने के कारण भारत की आजादी के ६८ वर्ष बाद भी कड़े कानून के रूप में परिवर्तित नहीं हो सका। जिसके परिणाम स्वरूप देश के कुछ राज्यों में यदि इसे लागू किया जाता है तो कुछ राज्यों में इसका खुला उल्लंघन होता है। अतः समूचे आर्य समाज की ओर से भारत सरकार से माँग की जा रही है कि गौहत्या बन्दी एवं गौमाँस के निर्यात पर कड़ा कानून बनाकर इसे पूरे देश में प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए प्रशासन की ओर से कड़े प्रबन्ध करने की व्यवस्था की जाये।

२. पूरे देश में पूर्ण शराबबन्दी लागू करके नशा मुक्त भारत का स्वप्न पूरा हो सके।

३. इसके साथ ही विगत दिनों लोकसभा में कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा दिये गये बयान **''कि आर्य लोग बाहर से आये हैं भारत के मूल निवासी नहीं हैं''** की आर्य समाज कड़ी निन्दा करता है। आर्य का अर्थ ही श्रेष्ठ व्यक्ति होता है फिर इस प्रकार के भ्रामक बयान देकर देश की जनता को भ्रमित करना उचित नही है। इसी प्रकार के कुछ तथ्य इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में भी विद्यार्थियों को पढ़ाये जा रहे हैं जो कि सर्वथा अनुचित एवं गलत हैं। इस प्रकार के भ्रामक तथ्य इतिहास की पुस्तकों से हटाये जाने के लिए आर्य समाज द्वारा सरकार से माँग की जा रही है जिससे देश की युवा पीढ़ी इतिहास के वास्तविक तथ्यों की ही जानकारी प्राप्त कर सके और इस प्रकार के भ्रामक तथ्यों से भ्रमित न हो।

अतः विश्व की समस्त आर्य समाजों का संचालन करने वाली सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के इस प्रतिनिधि मण्डल द्वारा भारत सरकार से यह प्रार्थना की जा रही है कि गौहत्याबन्दी एवं गौ–माँस के निर्यात पर पूर्णरूप से प्रतिबन्ध लगाने सम्बन्धी कानून पूरे देश में एक साथ कड़ाई से लागू करने की सरकार की ओर से समुचित व्यवस्था करने की कृपा करें।

सधन्यवाद,

निवेदक

स्वामी आर्यवेश – सभा प्रधान
प्रो. विट्ठलराव आर्य – सभा मंत्री
पं. माया प्रकाश त्यागी – सभा कोषाध्यक्ष
डॉ. अनिल आर्य – संयोजक एवं उपप्रधान
वैद्य इन्द्रदेव – उपप्रधान
प्रेमपाल शास्त्री – उपप्रधान
मधुर प्रकाश शास्त्री – उपमंत्री

आर्य समाज ने किया जोरदार प्रदर्शन

गांधी जी से अपील की कि वे अपने सहयोगियों को ऐसे विवादित बयान देने से रोकें। स्वामी जी ने समस्त उन लोगों को चुनौती दी जो यह मानते हैं कि आर्य लोग बाहर से आये थे वे इस विषय पर आर्य समाज के विद्वानों से शास्त्रार्थ कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि अपनी राजनैतिक रोटियाँ सेंकने तथा सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए इस प्रकार के अनर्गल और आपत्तिजनक बयान दिये जाते हैं। स्वामी जी ने कक्षा 6 से लेकर कक्षा 12 तक एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित इन कक्षाओं के पाठ्यक्रम की पुस्तकों में मनगढ़ंत तथा बेबुनियाद बातें जो बच्चों को पढ़ाई जा रही हैं उसको अविलम्ब पाठ्यक्रम से हटाने की माँग की। स्वामी जी ने कहा कि बच्चों को इस प्रकार के अनर्गल तथा बेबुनियाद इतिहास को पढ़ाना अविलम्ब बन्द किया जाये। आर्य समाज अब यह सब सहन नहीं करेगा। अपनी संस्कृति और इतिहास को बचाने के लिए आर्य समाज ने कमर कस ली है। सारे देश में जन–जागृति करके इस प्रकार के कुकृत्यों को रोकने के लिए आर्य समाज गाँव स्तर पर आन्दोलन छेड़ेगा।

इस अवसर पर आर्य जगत के प्रकांड विद्वान आचार्य महावीर मीमांसक जी ने खड़गे के बयान की तीव्र शब्दों में निन्दा करते हुए आर्यों के प्राचीन इतिहास का दिग्दर्शन कराते हुए आर्यों को भारत का मूल निवासी सिद्ध किया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने सारे देश में गौहत्या बन्दी की माँग करते हुए कहा कि गौमाता को बचाने के लिए सभी लोग कम से कम एक गाय अवश्य पालें। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में गाय को बचाने के लिए गाँव–गाँव में जाकर जन–जागरण किया जायेगा। मूर्धन्य विद्वान तथ आर्य संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी ने कहा कि त्रिविष्टप जो आज कल तिब्बत के नाम से जाना जाता है वही आर्यों का उत्पत्ति स्थल है और वहीं से आर्य लोग सारे भारत में फैल गये। उन्होंने गाय की रक्षा का संकल्प लेते हुए कहा कि प्रत्येक आर्य जहाँ कहीं भी गाय को काटने के लिए ले जाते देखें तुरन्त उसकी रक्षा के लिए आवश्यक कदम उठायें।

इस अवसर पर प्रसिद्ध समाज सेवी तथा विश्वविख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि आज बहुत दिनों के बाद आर्यों का जोश देखने को मिला है और इसके लिए निश्चय ही सभा का वर्तमान नेतृत्व बधाई का पात्र है। उन्होंने आर्यों की परिभाषा बताते हुए कहा कि जो कर्मशील है, गतिशील है वही आर्य है और इसके विपरीत दस्यु होते हैं। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने गाय को एक प्रतीक के रूप में बताया उससे उनका अभिप्राय समस्त मूक पशु–पक्षियों से था। उन्होंने जब भी गौ की चर्चा की तो उसके बाद आदि शब्द जरूर लगाया इससे उनका अभिप्राय स्पष्ट होता है कि वे गाय सहित सभी मूक पशु–पक्षियों की रक्षा की भावना रखते थे। गाय का पालन–पोषण हिन्दू ही ज्यादा करते हैं वैसे तो मुसलमान भी गाय पालते हैं लेकिन हिन्दू ज्यादा पालते हैं और देखा गया है कि जब गाय दूध देना बन्द कर देती है तो उसको बेच दिया जाता है या छोड़ दिया जाता है जो अन्ततः कसाई के हाथों में पहुंचती है और उनकी हत्या कर दी जाती है। अतः हम सबको मिलकर सोचना है कि गायों की रक्षा किस प्रकार की जाये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने कहा कि हमारे देश में गाय को प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय कर्णधार माना गया है। प्रजातन्त्र की नींव पर बनी सरकार को बहुसंख्यक जनता की मांग की उपेक्षा न करके गौहत्या के विरुद्ध राष्ट्रीय नीति बनाने में शीघ्रता करनी चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य ने श्री खड़गे के बयान को देश तोड़ने वाला बताया। उन्होंने सरकार से मांग करते हुए कहा कि सारे देश में गौहत्याबन्दी का कानून शीघ्र पास किया जाये। उन्होंने कहा कि गाय को देखने से उसके श्वास को सूंघने से गाय के गोबर की गन्ध से गौमूत्रपान से कितने ही रोगों के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। पृथ्वी की मान–मर्यादा को सुरक्षित रखने वाली सात शक्तियों में गौ को प्रथम स्थान दिया गया है। गाय आजीवन पुण्य कर्म में रत रहती है। उन्होंने कहा कि गाय कृषि प्रधान भारत देश की अर्थव्यवस्था का मूलाधार रही है। ऐसी सर्व उपयोगी प्राणी को केवल मांस प्राप्त करने के लिए मारना अत्यन्त दुष्कृत्य है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज गोरक्षा के लिए कृत संकल्प है और गौहत्या बन्द करा कर ही रहेगा।

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने गौहत्या को राष्ट्रीय कलंक बताते हुए कहा कि हम गाय सहित सारे प्राणियों की रक्षा चाहते हैं और मांस खाने के लिए तो किसी पशु–पक्षी की हत्या नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हम तो जन्मजात आर्य हैं और भारत पहले से ही आर्यों का देश है। हिन्दू नाम तो हमें विदेशियों ने दिया है। हम आर्य हैं और ये देश आर्यों का है। उन्होंने कहा कि हम बड़ी श्रद्धा के साथ नारा लगाते हैं कि आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा ग्रन्थ, ओ३म् हमारा पूज्य है और यज्ञ हमारा कर्म।

ठा. विक्रम सिंह जी ने कहा कि आज गौहत्या की रक्षा के संदर्भ में इतना बड़ा आयोजन देखकर हृदय गद–गद है। निश्चय ही गौहत्या हम आर्यों के लिए एक बदनुमा दाग की तरह है। मैं सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि वे सारे देश में जोर–शोर से गौहत्या के विरुद्ध जोरदार आन्दोलन चलायें और मैं उसमें तन–मन–धन से सहयोग दूंगा।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष और सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि गाय हमारी माता है और इसकी हत्या को रोका जाना हम सबका कर्त्तव्य है। गाय अत्यन्त उपयोगी तथा मानव जीवन का आधार है और वायु मण्डल शुद्धिकरण का प्राकृतिक साधन है और इसका मूत्र और गोबर कीट नाशक है। उन्होंने कहा कि यदि भारतीय संस्कृति को बचाना है तो गाय की रक्षा अति आवश्यक है और इसके लिए आर्य समाज हर आवश्यक कदम उठायेगा। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने श्री खड़गे के बयान की तीव्र भर्त्सना करते हुए उनसे अपने शब्द वापस लेने की मांग की तथा भारत सरकार से सारे देश में पूर्ण गौहत्या बन्दी विषयक कानून बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

इससे पूर्व विशेष यज्ञ का आयोजन श्री प्रेमपाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में किया गया जिसमें श्रद्धालुओं ने आहुतियाँ प्रदान की। तदुपरान्त धरने का प्रारम्भ किया गया।

प्रदर्शन स्थल पर विभिन्न प्रकार के नारों से लिखे झण्डे, बैनर लेकर विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे तथा सारे वातावरण को विभिन्न प्रकार के नारों से गुंजायमान कर रहे थे। इस अवसर पर रोषवश कांग्रेस नेता श्री खड़गे का पुतला भी फूंका गया तथा विशाल जुलूस के साथ राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री को ज्ञापन देने के लिए संसद मार्ग की तरफ कूच किया। जहाँ पर पुलिस द्वारा रोके जाने पर स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल ज्ञापन देने के लिए ले जाया गया। इस सफल कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अनिल आर्य ने अत्यन्त कुशलता के साथ किया।

आर्य समाज द्वारा किये जा रहे राष्ट्रोपयोगी कार्यक्रमों में एक जुटता का परिचय दें आर्यजन

– स्वामी आर्यवेश

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने मार्मिक अपील करते हुए आर्य जगत के सभी प्रतिष्ठित नेताओं, पदाधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं से आर्य समाज के द्वारा किये जा रहे राष्ट्रोपयोगी कार्यक्रमों में बढ़–चढ़कर भाग लेने तथा सहयोग देने का आग्रह किया है। उन्होंने कहा कि दिसम्बर माह आर्य समाज के इतिहास में विशेष महत्त्व रखता है। क्योंकि इसी महीने में आर्य समाज के दो महान सपूतों ने देश हित में बलिदान दिया था। 23 दिसम्बर स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के रूप में तथा 19 दिसम्बर अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्र लाहिड़ी तथा रोशन सिंह आदि ने देश की बलिवेदी पर अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था। अतः प्रतिवर्ष पूरा आर्य जगत अपने इन महापुरुषों के बलिदान दिवस को बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाता है। इन वीरों के बलिदान से हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए।

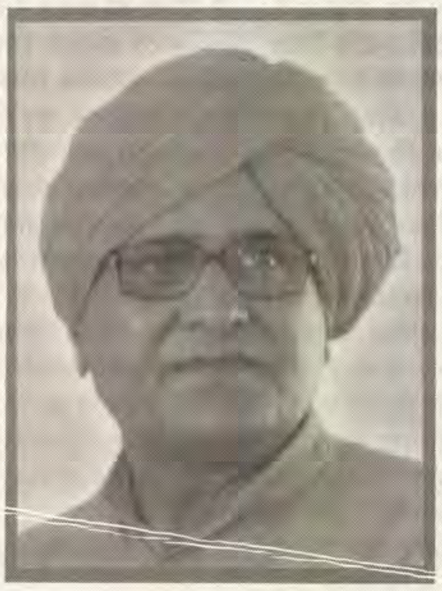

आज हमारे देश में गौमाता की हत्या तथा गौमांस का निर्यात देश के माथे पर एक बदनुमा कलंक का टीका है। गाय हमारे देश की संस्कृति का प्रतीक है। गौहत्या बन्दी की मांग आर्य समाज की बहुत पुरानी मांग है। अतः एक बार पुनः सार्वदेशिक सभा ने इस कलंक को धोने का निश्चय किया है। 16 दिसम्बर से विधिवत आन्दोलन का सूत्रपात कर दिया है और इस आन्दोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने की बृहद योजना का कार्यान्वयन करने के लिए आर्य समाज के सभी अधिकारियों, कार्यकर्ताओं से पूर्ण सहयोग की अपेक्षा करते हुए मैं सभी आर्यों का आह्वान करता हूँ कि हर प्रकार के आपसी मतभेदों को दूर करते हुए, ईर्ष्या, द्वेषों को हटाते हुए, गुटबन्दी से ऊपर उठकर गौहत्याबन्दी आन्दोलन को सहयोग देकर सफल बनायें और एकजुटता का परिचय दें। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द तथा अमर शहीर रामप्रसाद बिस्मिल व अशफाक उल्ला खां को हमारी यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि वे अपनी आर्य समाजों के प्रस्ताव देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नाम भिजवायें और उसकी एक कापी सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में अवश्य भेजें। शीघ्र ही आन्दोलन की भावी रूपरेखा सभी आर्यजनों के पास भेजी जायेगी। हम इस आन्दोलन को चरणबद्ध तरीके से चलाकर सफलता के शिखर तक पहुंचाने के लिए कृतसंकल्प हैं। आप सभी आर्यजनों का तन–मन–धन से सहयोग अपेक्षित है, जो भी इस आन्दोलन से जुड़ना चाहते हैं वे सार्वदेशिक सभा में पत्राचार कर अपने नाम पते, दूरभाष, ई–मेल आदि भिजवा दें ताकि राष्ट्रीय स्तर पर, प्रान्तीय स्तर पर, जिला स्तर पर, तहसील स्तर पर और ब्लॉक स्तर पर आन्दोलन समितियों में सभी को प्रतिनिधित्व दिया जा सके। आप सभी के सुझाव आमंत्रित हैं।

गौहत्या राष्ट्र की अस्मिता पर कुठाराघात है

– स्वामी आर्यवेश

विश्व की प्राचीनतम निधि माने जाने वाले ऋग्वेद में गाय को अवध्य प्राणी घोषित किया गया है। कारण कि यह प्राणी कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था का मूलाधार रहा है। जन्म देने वाली माँ के बाद बच्चे का आजीवन पालन–पोषण अपने दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी आदि से करने वाला प्राणी भी यही रहा है। आज देश में धन के लोभ में गाय तथा विभिन्न पशुओं की हत्या का कारोबार चरम पर पहुँच चुका है। गाय जिसे हम माँ का दर्जा देते हैं उसकी संख्या निरन्तर घटती चली जा रही है। पहले गाँव–देहात में खूंटों पर अथवा नगरों में सड़कों पर आवारा गायें दिखाई देती थी, अब नहीं दिखाई देतीं, जो गौवंश के तेजी से होते ह्रास का प्रमाण है। गत 50 वर्षों से गौ–रक्षक सोये हुए हैं और गौहत्यारे जागे हैं और उन्होंने गौहत्या के अनेक वैध–अवैध रास्ते तलाश कर लिये हैं। इनके आगे सरकार और प्रशासन लाचार दिखाई देते हैं। आश्चर्यजनक बात यह है कि गौवंश की हत्या में न मुस्लिम और न ही ईसाई रुचि रखते हैं बल्कि वोट के सौदागर रुचि रखते हैं अथवा वे लाबियाँ रुचि रखती हैं जो माँस व्यापार करती हैं, जूते, रासायनिक खाद, वनस्पति घी, ट्रैक्टर व एलोपैथिक दवाएं निर्मित करती हैं। इस साजिश और मिलीभगत को आज समझने की आवश्यकता है। गौरक्षा केवल गोपालन व गौसंवर्द्धन से नहीं होगी बल्कि केन्द्रीय गौहत्या बन्दी कानून बनने से ही होगी। जिस पर किसी प्रकार का समझौता किसी से नहीं किया जा सकता।

एक गाय जितने मूल्य का चारा खाती है उससे पांच गुना मूल्य का गोबर उत्पादित करती है तथा विसर्जित गौमूत्र का अतिरिक्त लाभ देती है। यदि वह गाय दूध भी देती हो तो उसे सोने पर सुहागा ही माना जायेगा। एक गाय से औसतन प्रतिदिन 10 किलोग्राम गोबर और 15 लीटर गौमूत्र प्राप्त होता है। इस समय देश में जितना गोधन है उससे प्रतिदिन 22 लाख टन गोबर प्राप्त होता है जिसका मूल्य लगभग 55 करोड़ रुपया आंका गया है। प्रत्येक स्वदेशी गाय अपने जीवन में 5400 लीटर बायोगैस का उत्पादन कर सकती है जो 6.8 करोड़ टन लकड़ी दहन से प्राप्त ऊर्जा के बराबर है अर्थात् एक गाय अपने जीवन में 14 करोड़ वृक्षों को सुरक्षा प्रदान करती है। आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में गौमूत्र का प्रयोग सदियों से होता आ रहा है। गौमूत्र कम से कम 500 रोगों की औषधियों में काम आता है। इसे दुर्भाग्य ही माना जायेगा कि यह सब जानते हुए भी अधिक माँस व अधिक दूध के लोभ में विदेशी नस्ल की गायों को भारत में प्रोत्साहित किया जा रहा है और देशी गायों की नस्ल को बूचड़खानों में कत्ल कराया जा रहा है। देशी गायों की लगभग दो दर्जन नस्लें तो पूरी तरह खत्म व विलुप्त हो चुकी हैं। माँस उत्पादन में भारत का विश्व में आठवाँ स्थान है। पश्चिम बंगाल, केरल और पूर्वोत्तर के कुछ प्रान्तों को छोड़कर समस्त देश में यद्यपि गौहत्या पर प्रतिबन्ध है लेकिन गैर–कानूनी रूप से गौहत्या हर प्रान्त में अपने चरम पर है और अपराधियों की पुलिस व प्रशासन से सांठ–गांठ होने के कारण यह अवैध व्यापार जोरों से चल रहा है।

गौवंश की हत्या से उपजी परिस्थिति को देखते हुए साम, दाम, दण्ड, भेद सभी का आश्रय ग्रहण कर हमें सरकार पर दबाव बनाकर पूर्ण गौहत्या बन्दी का पथ प्रशस्त करना होगा। हम उन सभी को कसाई मानते हैं जो गाय को काटता है, गाय को कटवाता है और जो इस खेल को रोकने का तनिक भी प्रयास नहीं करता, इसमें हिन्दू, सिख, मुस्लिम, ईसाई, जैन सभी शामिल हैं। अब समय आ गया है कि हम सभी एक मंच पर इकट्ठे होकर अपने इस पाप का प्रायश्चित करें और भारत सरकार को भी प्रायश्चित करने के लिए बाध्य करें, निश्चय ही हमारे इस राष्ट्रव्यापी आन्दोलन में भारत की पूरी जनता साथ देगी क्योंकि जिस देश में जहाँ कभी दूध–दही की नदियाँ बहती थीं वहाँ आज लगभग 50 रुपये किलो दूध मिल रहा है और जिसकी शुद्धता की कोई गारण्टी नहीं। यहाँ तक कि यज्ञ हवन करने के लिए भी गाय का घी मिलना दुर्लभ हो गया है। यदि यही हालात रहे तो वह दिन दूर नहीं जब दूध–घी के इंजेक्शन लोगों को लगवाने पड़ेंगे। ब्राउन विश्वविद्यालय के वर्ल्ड हंगर प्रोग्राम के अन्तर्गत अनुमान लगाया गया कि माँस उत्पादन के लिए जितना अनाज दुनिया के माँस उत्पादक पशुओं को खिलाकर माँस तैयार करते हैं उस माँस से केवल 2.6 अरब लोगों को माँसाहार मिलेगा जबकि इतने ही अनाज से 6 अरब शाकाहारियों की भूख मिटाई जा सकती है। सारी दुनिया की कुल आबादी 7 अरब के लगभग है। जाहिर है कि माँसाहार प्रतिबन्धित होने से इतना अनाज बचेगा कि कोई भूख से नहीं मरेगा। पशु हत्या और माँसाहार को प्रतिबन्धित करने से पूरे विश्व में न केवल हरित क्रांति और श्वेत क्रांति का सूत्रपात्र होगा बल्कि औद्योगिक क्रांति और आर्थिक क्रांति का पथ भी सुगमता से प्रशस्त होगा। लेकिन यह देश मूर्खों का देश बनकर रह गया है जहाँ एक काला हिरण मारने पर सुप्रसिद्ध क्रिकेटर और सिने कलाकार को जेल जाने से बचने के लिए वर्षों अदालत की खाक छाननी पड़ती है लेकिन वहीं एक गौहत्यारे को यहाँ कोई सज़ा नहीं मिलती। सम्पन्न घराने के लोग कुत्ते और बिल्ली पालने का तो शौक रखते हैं लेकिन गाय पालना मुसीबत समझते हैं। इस सोच को बदले बिना पशु रक्षा कैसे हो सकती है और उन सरकारों को क्या कहा जाये जो देश की शराब लाबी और माँस लाबी की तिजोरियाँ भरने के लिए देशभर में मुर्गी पालन, मछली पालन, सुअर पालन जैसी सैकड़ों योजनाएँ चला रही हैं लेकिन गौपालन, गौरक्षण, गौसंवर्द्धन के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार नहीं हैं।

इन समस्त परिस्थितियों को देखते हुए मैं आप सबका आह्वान करना चाहता हूँ कि यदि हम सब अपनी पारस्परिक प्रतिस्पर्धा, अहं और अपनी–अपनी रणनीति का परित्याग कर एक मंच पर संगठित होकर गौरक्षा के संघर्ष को शुद्ध, नैतिक व आर्थिक आधार पर खड़े होकर शुरू करें और किसी भी प्रकार की दलगत राजनीति की दलदल से मुक्त होकर इस अभियान को अपना समर्थन दें तो निश्चय ही गौवंश को बचाने में हम सफल हो सकते हैं।

भारत सरकार से हमारी निम्नलिखित माँगे हैं जिनको सरकार अविलम्ब स्वीकार करे अन्यथा सारे देश में व्यापक आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया जायेगा।

1. गाय को राष्ट्रीय व अवध्य पशु घोषित किया जाये।
2. गौहत्यारों को आजीवन कारावास का दण्ड मिले।
3. जिन बूचड़खानों में गौवंश कटे उनका रजिस्ट्रेशन तुरन्त निरस्त कर उन्हें स्थाई रूप से बन्द कर दिया जाये।
4. केन्द्र में गौ–मंत्रालय और हर प्रान्त में गौसेवा आयोग अनिवार्यतः स्थापित किया जाये।
5. पंचगव्यों पर आधारित कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करने हेतु सभी आवश्यक सुविधाएँ प्रदान की जायें।
6. गौ–शालाओं के निर्माण हेतु सस्ती दरों पर जमीन व लोन उपलब्ध कराये जायें।

प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 23260985

कॉंग्रेस नेता श्री मल्लिकार्जुन खड़गे सार्वजनिक रूप से माफी मांगें आर्य लोग भारत के मूल निवासी हैं, आर्यों को विदेशी बताना भारतीय संस्कृति एवं इतिहास पर चोट करना है।

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने कांग्रेस नेता श्री मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा आर्यों को बाहर से आये लोग बताने पर कड़ा विरोध जताया है तथा निंदा की है। उन्होंने एक प्रेस वक्तव्य के द्वारा कहा है कि संविधान पर बहस के बहाने लोक सभा में कांग्रेस के नेता श्री मल्लिकार्जुन खड़गे ने बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर तथा स्वयं को भारत का मूल निवासी तथा आर्यों को बाहर से आए लोग बता कर अपने दिमागी दिवालिये पन का परिचय दिया है।श्री खड़गे को मालूम होना चाहिए कि इस देश का प्राचीनतम नाम आर्यावर्त है तथा आर्य यहां के मूल निवासी हैं। भारत के प्रचीन इतिहास में, रामायण व महाभारत व जैन साहित्य में हर जगह आर्य शब्द का प्रयोग हुआ है। इसी से उन्हें समझ लेना चाहिए कि आर्य यहाँ के मूल निवासी हैं।श्री खड़गे के वक्तव्य से उनकी विघटनकारी एवं समाज को तोड़ने वाली मानसिकता झलकती है।

यदि हम प्राचीनतम इतिहास व अन्य शास्त्रों को पढ़ें, पुराने दस्तावेजों व लेखों को खंगाले तो खड्गे द्वारा व्यक्त धारणा बिल्कुल गलत साबित हो जायेगी। इतिहास के आधार पर यह बात तो सत्य ही है कि आर्य ही भारत के मूल निवासी हैं। वेद विश्व का प्राचीनतम धार्मिक ग्रन्थ सर्वस्वीकृत है। जिनका दर्शन, प्रवचन भारत के ऋषियों द्वारा किया गया। यह ऋषि आर्यों के आदि पूर्वज थे। अतः आर्य ही भारत के पूर्वज सिद्ध होते हैं। वेद के बाद दुनिया का प्राचीनतम ग्रन्थ मनु महाराज द्वारा रचित 'मनुस्मृति' है उसमें भी कई स्थानों पर आर्यों का वर्णन आता है। उसमें लिखा है –

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मनः, स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।

इसका भावार्थ है कि प्राचीन काल में इसी आर्यावर्त देश में उत्पन्न विद्वानों से समस्त विश्व के लोग शिक्षा व ज्ञान प्राप्त किया करते थे। आर्यों के रहने वाले इस देश को आर्यावर्त कहकर पुकारा जाता था। इस प्रकार आर्य इसी भूमि के मूल निवासी हुए। रामायण में वर्णित सभी नगर व प्रान्त भारत के ही हैं। रामायण में राम ने कई बार लक्ष्मण के लिए आर्य शब्द का प्रयोग किया है। महाभारत काल जो कि 5000 वर्ष पुराना माना जाता है उस महाभारत युद्ध में भारत की ही भौगोलिक सीमाओं का वर्णन आता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखा है कि उस महाभारत काल में चीन, अमेरिका, यूरोप, यूनान, ईरान आदि देशों के राजाओं ने यहां आकर राजसूय यज्ञ में भाग लिया। वे लिखते हैं स्वायंभुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त पृथ्वी पर आर्यों का ही चक्रवर्ती राज रहा। आर्यों की भाषा संस्कृत मानी जाती है इस भाषा का प्रचलन लाखों वर्ष पुराना है। राम के युग से ये भाषा चली आ रही है और राम का युग लाखों वर्ष पुराना माना जाता है। अतः आर्य भारत में लाखों वर्षों से रह रहे हैं। 'मनुस्मृति' में आर्यावर्त (भारत) की भौगोलिक सीमाओं का वर्णन किया गया है। उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में विंध्याचल पर्वत, पश्चिम में सरस्वती तथा पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी बहती है। उस देश का नाम आर्यावर्त है।

भारतीय ही नहीं कई पाश्चात्य विद्वान भी भारत को ही आर्यों की मूल भूमि मानते हैं। इतिहासकार एल. एलफिन्स्टन ने 'हिस्ट्री ऑफ इंडिया' पुस्तक में लिखा है वेद में, मनुस्मृति में अथवा अन्य किसी पौराणिक संस्कृत ग्रन्थ में आर्यों को भारत के अलावा और किसी देश का निवासी नहीं बताया गया है।

अतः श्री खड़गे को अपने इस विवादित एवं आपत्तिजनक बयान के लिए सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी चाहिए। इसी सन्दर्भ में विश्व की समस्त आर्य समाजों के सर्वोच्च संगठन सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संसद भवन के समक्ष उनके विरुद्ध जोरदार प्रदर्शन किया जा रहा है। विदित् हो कि संविधान निर्माता बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर अपने जीवन में आर्य समाज से बहुत प्रभावित रहे क्योंकि वे भली प्रकार जानते थे कि आर्य समाज जन्मना जाति के आधार पर किसी को छोटा व बड़ा नहीं मानता। अतः भारत के सभी श्रेष्ठ लोग आर्य हैं व आर्यावर्त देश के निवासी होने के कारण भी वे आर्य कहलाते हैं।

प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2

युवकों! क्या तुम्हारे सब काम सत्य पर आश्रित हैं?

– स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

पुत्रों! आज मैं तुम्हें उन बंधनों से मुक्त करता हूँ, जिनके अनुसार गुरुकुल में चलना तुम्हारे लिए आवश्यक था। पर यह न समझना कि अब तुम्हारे लिए कोई बंधन नहीं है। प्राचीन काल से हमारे ऋषियों ने कुछ बंधन बांध रखे हैं, उन्हें मैं आज तुम्हें सुनाना चाहता हूँ। इन बंधनों के पालन करने में किसी का तुम पर दबाव नहीं, इसीलिए ये बंधन और भी कड़े हैं। ये बंधन उन उपनिषद् वाक्यों में वर्णित हैं, जिन्हें आज से हजारों वर्ष पहले इस पवित्र भूमि में प्रत्येक आचार्य अपने स्नातकों को विद्या समाप्ति के समय सुनाया करता था। उन्हीं पुराने आचार्यों का प्रतिनिधि होकर मैं तुम्हें वे वाक्य सुनाता हूँ।

पुत्रों! परमात्मा सत्यस्वरूप है। उसे प्यारा बनने के लिए अपने जीवन को सत्यस्वरूप बनाओ। तुम्हारे मन में, तुम्हारी वाणी में और तुम्हारी क्रिया में सत्य हो। धर्म-मर्यादा का उल्लंघन मत करो। इस मर्यादा का साक्षी अन्तःकरण ही है। बाहर से कोई धर्म बतलाने वाला नहीं है। जो हृदय परमात्मा का आसन है, वह तुम्हें धर्म की मर्यादा बतलायेगा। अपनी आत्मा की वाणी को सुनो और उसके अनुसार चलो। स्वाध्याय से कभी मुख न मोड़ो। वह तुम्हें प्रमाद से बचायेगा। जिस आचार्य ने तुम्हारी इतने दिनों तक रक्षा की, उसके प्रति तुम्हारा जो कर्त्तव्य है उसे अपने हृदय से पूछो। यह तुम्हारा आचार्य है, मैं नहीं जानता कि तुम इसे क्या दक्षिणा देना चाहते हो। मैं तुमसे केवल एक ही दक्षिणा मांगता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा ऐसा कोई काम न हो जिससे तुम्हें अपनी आत्मा और परमात्मा के सामने लज्जित होना पड़े।

तुममें से अब कई गृहस्थ में प्रवेश करेंगे। उनसे मैं यह कहता हूँ कि पांचों यज्ञों के करने में कभी प्रमाद न करना। माता, पिता, आचार्य और अतिथि ये तुम्हारे देवता हैं, इनकी सदा सुश्रूषा करना धर्म समझो।

पुराने ऋषि बड़े उदार और निरभिमान थे। वे कभी पूर्णतया दोषरहित होने का दावा नहीं करते थे। उन्हीं का प्रतिनिधि होकर मैं तुम्हें कहता हूँ कि हमारे अच्छे गुणों का अनुकरण करो और दोषों को छोड़ दो। इस संसार की अंधियारी में किसी को अपना ज्योति स्तम्भ बनाओ। पढ़ा-पढ़ाया कुछ अंश तक पथप्रदर्शक होता है, पर सच्चे पथ-प्रदर्शक वे ही महापुरुष होते हैं, जो अपना नाम संसार में छोड़ जाते हैं। वे जीवन समुद्र में ज्योति स्तम्भ का काम देते हैं। ऐसे आत्मत्यागी, सत्यवादी और पक्षपातरहित महापुरुषों के पथ पर चलो, चाहे वे जीवित हों या ऐतिहासिक।

लेना तो सभी संसार जानता है। तुम इस योग्य हो कि अपनी बुद्धि और विद्या में से कुछ दे सको। जो तुम्हारे पास है, उसे उदारता से फैलाओ। हाथ खुला रखो, मुट्ठी को बन्द न होने दो। जो सरोवर भरता है वह फैलता है, यह स्वाभाविक नियम है।

जिस भूमि की मिट्टी से तुम्हारी देह बनी है, जिसकी गंगा का तुमने निर्मल जल पिया है और जिसके गौरव के सामने संसार का कोई देश ठहर नहीं सकता, उस पवित्र भूमि भारत में रहते हुए तुम उसके यश को उज्ज्वल करोगे, इसकी मुझे पूरी आशा है। इसके साथ ही जिस सरस्वती की कोख में तुमने दूसरा जन्म लिया है, उसे मत भूलना। किसी भी काम को करते हुए सावित्री माता की उपासना से विमुख न होना।

यह मैंने संक्षेप में उन वाक्यों का सारांश सुना दिया है, जो कि सहस्रों वर्षों से इस पवित्र भूमि में गूंजते रहे हैं। इन्हें गुरु मन्त्र समझो और अपना पथ दर्शक बनाओ। इसके अतिरिक्त मेरा भी तुम्हारे साथ कई वर्षों का सम्बन्ध रहा है। मैं तुमसे गुरुदक्षिणा नहीं मांगता। गुरु दक्षिणा देना तुम्हारा धर्म है, मांगना मेरा धर्म नहीं है। मैं तुमसे यह भी नहीं पूछता कि तुम्हारे राजनीतिक, सामाजिक या मानसिक विचार क्या-क्या है? मैं केवल तुमसे यही पूछता हूँ कि तुम्हारे सब काम सत्य पर आश्रित हैं या नहीं। स्मरण रखो, यह संसार सत्य पर आश्रित है। इसके बिना समाज के नियम पद दलित करने योग्य हैं। यदि सत्य तुम्हारे जीवन का अवलंबन है, तो मुझे न कोई चिन्ता है और न ही कुछ मांगना है।

पुत्रों! आज मुझे कितनी प्रसन्नता है, तुम उसका अनुभव नहीं कर सकते। मुझे अपने जीवन में जिस बात को देखने की आशा नहीं थी, उसे मैंने देख लिया। यदि आज मेरे प्राण भी चलने को तैयार हों, तो मैं बड़ी खुशी से उन्हें आज्ञा दे सकता हूँ। इस आनन्द का कारण मैं बताना निरर्थक समझता हूँ। तुममें से प्रत्येक उसे अनुभव कर रहा है। लोग समझा करते थे कि हम दिमागों को परतन्त्र बनाना चाहते हैं, परन्तु अब लोग देख रहे हैं कि यदि कोई ऐसा स्थान है जहाँ स्वतन्त्रता रुक नहीं सकती, तो वह यही स्थान है। मेरा अपने ब्रह्मचारियों को केवल एक ही उपदेश है - मत देखो कि लोग तुम्हें क्या कहते हैं, सत्य को दृढ़ता से पकड़ो। सारे संसार का सत्य ही आधार है। यदि तुम्हारा मन, वचन और कर्म सत्यमय है, तो समझो कि तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो गया। प्रसिद्धि के पीछे भाग कर कोई काम मत करो। प्रसिद्धि के पीछे भागने से किसी की प्रसिद्धि नहीं हुई। अपने सामने एक उद्देश्य रख लो, उसी में लग जाओ, फिर गिरावट असम्भव है।

उपदेशक बनो या मत बनो, पर एक बात याद रखो, बनावटी मत बनो। सबको परमात्मा वाणी की शक्ति या उपदेश देने की शक्ति नहीं देता। वाणी न हो, न सही, किन्तु आचरण सत्यमय हो। नट न बनो, न इस संसार को नाट्यशाला बनाओ। स्वतन्त्र जीवन रखो। यदि इस प्रकार का स्नातकों का आचरण होगा, तो मुझे पूर्ण सन्तोष होगा।

- संकलनकर्ता मधुर प्रकाश शास्त्री,
मो.:-9810431857

आर्य समाज, हिसार ने 129वाँ वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया

हिसार, 6 दिसम्बर, आर्य समाज, लाला लाजपत राय चौक का 129वाँ वार्षिक उत्सव धूमधाम से मनाया गया। 2 दिसम्बर से प्रारम्भ हुए उत्सव में रोजाना प्रातःकाल हवन–यज्ञ किया गया। उत्सव के मुख्य वक्ता के रूप में सभा को सम्बोधित करते हुए वैदिक विद्वान डॉ. धर्मवीर आर्य ने वेद के आधार पर ईश्वर जीव प्रकृति की व्याख्या करते हुए कहा कि ईश्वर–जीव और प्रकृति सत् है, जीव सत् चित् (चेतन) और ईश्वर सत्–चित् और आनन्दस्वरूप है। उन्होंने बताया कि ईश्वर जड़ प्रकृति जो कि संसार जगत का उपादान कारण है, उसको कार्य रूप से परिवर्तित करके जीव आत्मा के भोग उपयोग एवं पुण्य–पाप के कर्मों के फलों को सुख–दुःख के रूप में भुगताने तथा मोक्ष को प्राप्त करवाने के लिए जगत की रचना करते हैं। ईश्वर सृष्टि की उत्पत्ति पालन व प्रलयकर्ता है तथा सृष्टि उत्पत्ति के समय वेदों का ज्ञान देता है, वेद संसार का संविधान है। उसके अनुसार ही हम सबको अपना जीवन जीना चाहिए।

आर्य समाज के प्रवक्ता सत्यपाल अग्रवाल ने बताया कि उत्सव के दौरान 4 दिसम्बर को नगर में शोभा यात्रा निकाली गई जो सीएवी हाई स्कूल से चलकर नगर के विभिन्न बाजारों से होते हुए आर्य समाज में सम्पन्न हुई। यात्रा में राष्ट्ररक्षा को दर्शाती हुई कई झांकियाँ शामिल थी। आर्य समाज में रोजाना सहारनपुर से आई भजनोपदेशिका संगीता आर्या ने राष्ट्ररक्षा के सम्बन्ध में तथा बिजनौर से आए युवा गायक मोहित शास्त्री ने सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए गाये गये भजनों से लोगों में नया जोश भर दिया। सभा का समापन राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के साथ किया गया। उपस्थित सदस्यों व छात्रों ने राष्ट्ररक्षा करने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान चौ. बदलूराम आर्य, संरक्षक चौ. हरिसिंह सैनी, गोपीचंद आर्य, नरेन्द्र मिगलानी, देवेन्द्र सैनी, दलबीर आर्य, आनन्द मुनि, राधेश्याम आर्य, बजरंग लाल गोयल मुकलान वाले, सत्यपाल अग्रवाल, नंदलाल चोपड़ा, बलराज मलिक, महेन्द्र सिंह आर्य, सीताराम आर्य, ताराचंद आर्य, ज्योति बैंदा, शन्ना देवी ठकराल, सीमा काठपाल, प्रेमवती आर्य, लाजवंती खन्ना, स्वामी सवितानन्द, स्वामी माधवानन्द व आचार्य रामस्वरूप सहित नगर के गणमान्य लोग भी उपस्थित रहे।

दुःखद समाचार

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित कया जाता है कि आर्य समाज शिवाजी चौक खण्डवा के प्रधान श्री कृष्णलाल आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती गोपीदेवी आर्य (विद्वानी) का दिनांक 21 नवम्बर, 2015 शनिवार को आकस्मिक निधन हो गया। आपका जीवन एक अत्यन्त सरल, मिलनसार एवं सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में रहा। आपने पार्षद के रूप में भी एक कार्यकाल पूर्ण किया। महिला आर्य समाज में भी आपने विभिन्न पदों पर रहते हुए एवं प्रधान के रूप में आर्य समाज की प्रशंसनीय सेवा की।

पेसूराम आर्य, मंत्री आर्य समाज शिवाजी चौक, खण्डा (म. प्र.), मो.:–9407143600

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

धरना प्रदर्शन की चित्रमय झांकियाँ

धरना प्रदर्शन की चित्रमय झांकियाँ

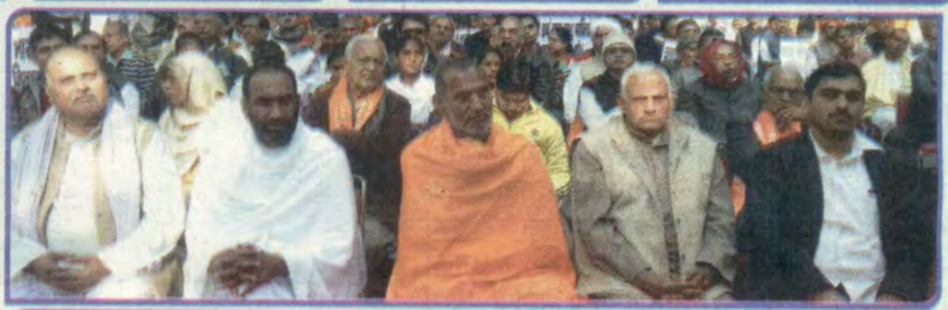

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

– डॉ. रघुवीर वेदालंकार, पूर्व प्रो. रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

श्रद्धा एवं विश्वास के आधार पर ही व्यक्ति आगे बढ़ता है। इनके बल पर ही असम्भावित तथा आश्चर्य जनक कार्य कर डालता है। शास्त्रों में इसीलिए कहा गया है – श्रद्धामयों द्वयं पुरुषः। स्वामी श्रद्धानन्द इसकी साक्षात् मूर्ति थे। स्वामी जी महर्षि दयानन्द के साक्षात् शिष्य थे। अपने गुरु के सत्य, निर्भीकता, ईश्वर विश्वास, श्रद्धा तथा कर्मशीलता आदि गुणों को स्वामी श्रद्धानन्द ने आत्मसात् किया हुआ था। श्रद्धा से ही सत्य की प्राप्ति होती है – श्रद्धया सत्यमाप्यते। और ये श्रद्धा सत्यं एवं ईश्वर विश्वास व्यक्ति को पूर्णतः निर्भीक बना देते हैं। महर्षि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द दोनों ऐसे ही थे। स्वामी जी के बलिदान पर महामना मालवीय जी ने कहा था कि वे सच्चे वीर थे। उनके हृदय में डर का तो नाम भी नहीं था। इसी प्रकार उनके सहपाठी पं. मोती लाल नेहरू ने कहा था कि वे किसी से डरते नहीं थे। एक सच्चा ईश्वर भक्त ही ऐसा कर सकेगा अन्य नहीं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का त्याग हमें महाराजा रघु का स्मरण दिलाता है। उन्होंने सब कुछ त्यागकर अपनी जालन्धर की एक मात्र कोठी भी आर्य समाज को दे दी तथा अपने पुत्रों के लिए कुछ भी न छोड़ा ऐसा आदर्श त्याग कहां मिलेगा, इतना ही नहीं, अपितु उन्होंने ने तो अपने जीवन को भी देश के लिए अर्पित कर दिया था। उनके बलिदान पर हुई शोकसभा में 26 दिसम्बर, 1926 को महात्मा गाँधी ने कहा था "स्वामी जी वीरों में अग्रणी थे। स्वामी जी ने अपनी वीरता से भारत को आश्चर्य चकित किया था। उन्होंने अपनी देह को भारतवर्ष के लिए कुर्बान करने की प्रतिज्ञा ली थी, इसका मैं साक्षी हूँ।"

संन्यास से पूर्व स्वामी जी ने अपना नाम मुंशी राम 'जिज्ञासु' रखा था। अपनी ईश्वर विषयक जिज्ञासा शान्त करने के लिए वे महर्षि दयानन्द से प्रश्न पूछते हैं। इसके लिए ही वे छिपकर स्वामी दयानन्द का अनुगमन करते हुए यह देखते हैं कि महर्षि प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में अति शीघ्र चलकर कहां जाते हैं तथा महर्षि को समाधिस्थ देखकर उनकी जिज्ञासा शान्त होती है। उन्होंने सुना था कि वन में एक महात्मा के पारस रात्रि में प्रतिदिन एक शेर आता है। जिज्ञासा वश वे इसका भी प्रत्यक्ष दर्शन छिपकर करते हैं। महर्षि दयानन्द भी सच्चे शिव की जिज्ञासा लेकर घर से निकलते हैं। इस प्रकार गुरु–शिष्य दोनों ही जिज्ञासा के आधार पर आगे बढ़े।

महर्षि दयानन्द ने लिखा 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' उनके शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द इसके अक्षरशः अनुयायी थे। अपने मद्य–मांसादि युक्त विलासी जीवन को भोगते हुए जब उन्हें सत्य का पता चला तो तुरन्त ही इनका त्याग करके कल्याण मार्ग के पथिक बन जाते हैं। नास्तिक विचारों वाला मुंशीराम स्वामी दयानन्द के उपदेश से पूर्णतः ईश्वर भक्त एवं वैदिकधर्मी बन जाता है, यह उनकी सत्य निष्ठा का ही परिणाम था। संन्यास लेते समय तीनों ऐषणाओं के त्याग की बात चलने पर वे तुरन्त ही बोल पड़ते हैं 'लोकैषणा तु मया न परित्यक्ता'। कितनी उच्च कोटि की सत्य ग्राहिता है स्वामी जी की, इसका अनुमान तो कीजिए। आज तो न्यायालयों में तथा राजनैतिक क्षेत्र में

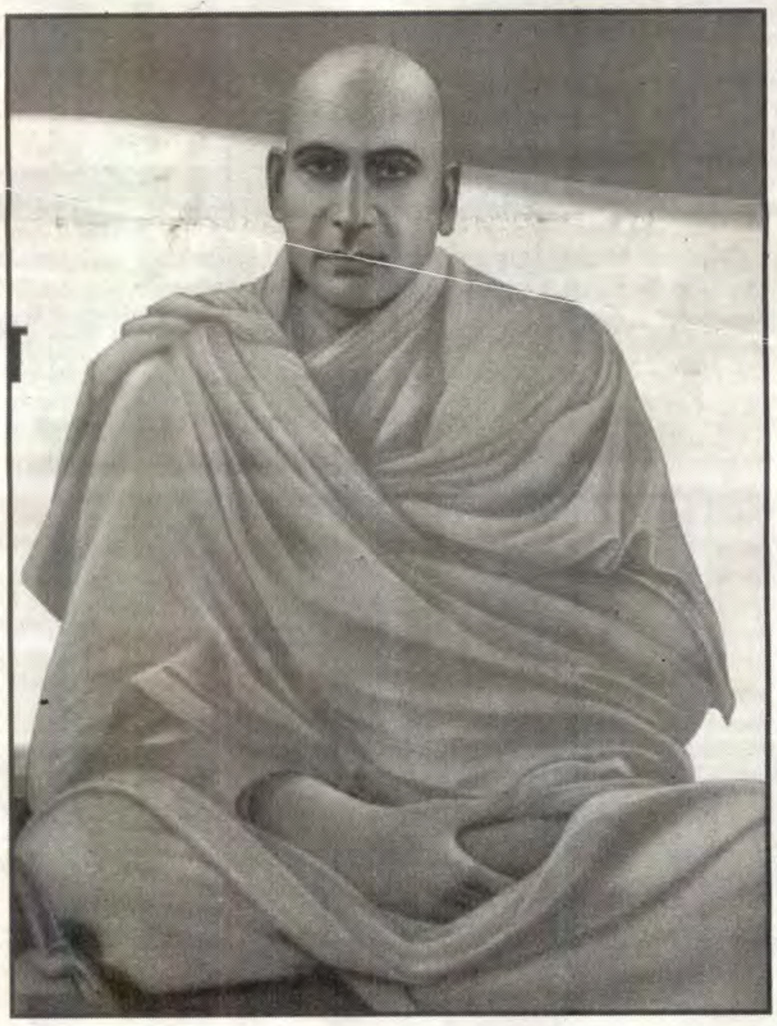

पद ग्रहण करते हुए शपथ लेकर भी कितना असत्य का आचरण जीवन में किया जाता है, यह सर्वविदित है। मुंशीराम जी की सत्यवादिता पर उनके पिता ने कहा था 'तुझे नास्तिक कैसे कहते हैं। नास्तिक तो ऐसा सच्चा नहीं हो सकता। अतः यह बिल्कुल ठीक ही है कि ईश्वर भक्त ही ऐसा सच्चा तथा निर्भीक हो सकता है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने जीवन को पूर्णतः लोक के लिए अर्पित किया हुआ था। अछूतोद्धार, शुद्धि, धर्म प्रचार, शिक्षा, राजनीति आदि कितने ही क्षेत्र थे जिनमें स्वामी जी ने मार्ग दर्शन किया। उनके अछूत विषयक कार्य के विषय में महात्मा गाँधी जी ने कहा था "स्वामी जी अनाथ बन्धु थे। अनाथों के सहायक थे। स्वामी जी ने अछूतों के लिए जो कुछ किया, उससे अधिक किसी और पुरुष ने भारत में नहीं किया।"

स्वामी श्रद्धानन्द जी का राजनैतिक क्षेत्र में पर्याप्त वर्चस्व था। एक समय तो वे दिल्ली के बेताज बादशाह थे। वे हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। इसी का परिणाम था कि मुस्लिम भाईयों ने स्वामी जी को दिल्ली की जामा मस्जिद से भाषणार्थ आमंत्रित किया। इससे पहले यह गौरव किसी को भी नहीं मिला था। इतना होने पर भी पद एवं यश के लाभ में उन्होंने कभी भी समझौता नहीं किया। जब महात्मा गाँधी ने स्वामी जी द्वारा किये गये शुद्धि आन्दोलन पर आपत्ति उठाई तो उन्होंने स्पष्ट रूप में कह दिया कि जब तक तवलीग (हिन्दुओं का मुस्लिम बनना) बन्द नहीं होता, तब तक शुद्धि आन्दोलन बन्द नहीं किया जा सकता। इसके लिए उन्होंने राजनैतिक पदों से भी त्यागपत्र दे दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द दूरदृष्टि वाले व्यक्ति थे। वे प्रत्येक कार्य के परिणाम का अनुमान करना जानते थे। इसीलिए जब उनकी पुत्री वेद कुमारी ईसाईयों के स्कूल से पढ़कर 'ईसा–ईसा बोल तेरा क्या लागेगा मोल' गाती हुई घर आयी तो उनका माथा ठनका कि ईसाई स्कूल तो ईसाइयत के प्रचार के केन्द्र हैं। तभी उन्होंने जालन्धर में 'आर्य कन्या पाठशाला' की नींव रखी। पुरातन संस्कृति की रक्षार्थ हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन आदर्श एवं अनुकरणीय है। वे स्वयं लिखते हैं 'मेरा जीवन आशातीत व्यतीत हुआ है।' योगी अरविन्द ने महर्षि दयानन्द के लिए लिखा है कि उनमें आध्यात्मिक क्रियाशीलता थी। स्वामी श्रद्धानन्द में भी हम यही पाते हैं। उनके विषय में साधु टी. एल. वास्वानी लिखते हैं 'स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कभी अपनी चिन्ता नहीं की। वीरतापूर्ण जीवन ही उनका आदर्श था।'

वीरता, त्याग, सदाचार, सत्य, ईश्वर विश्वास तथा देश को समर्पित जीवन ये स्वामी श्रद्धानन्द जी के ऐसे गुण हैं जिनको उन्होंने अपने गुरु महर्षि दयानन्द से साक्षात् ग्रहण किया था।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भी इसी श्रद्धा के आधार पर सत्य तथा ज्ञान की प्राप्ति करके शान्ति को प्राप्त किया। ऐसे श्रद्धामय महामानव को उनके बलिदान दिवस पर सादर नमन।

– बी–266, सरस्वती विहार, दिल्ली–34
मो.:–9868144317

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली के शुभ अवसर पर
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

लागत मूल्य 80/– रुपये

100 प्रति लेने पर मात्र
40 रुपये में दिया जायेगा

भारी छूट पर उपलब्ध

10 से अधिक प्रति लेने पर 50 रुपये में दिया जायेगा

23 गुणा 36 के 16वें साईज तथा पेपर बैक जिल्द में आकर्षक टाइटल के साथ बढ़िया कागज पर प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश उपलब्ध

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का संदेश

स्व० रघुवीरसिंह शास्त्री, पूर्व मंत्री सार्वदेशिक सभा

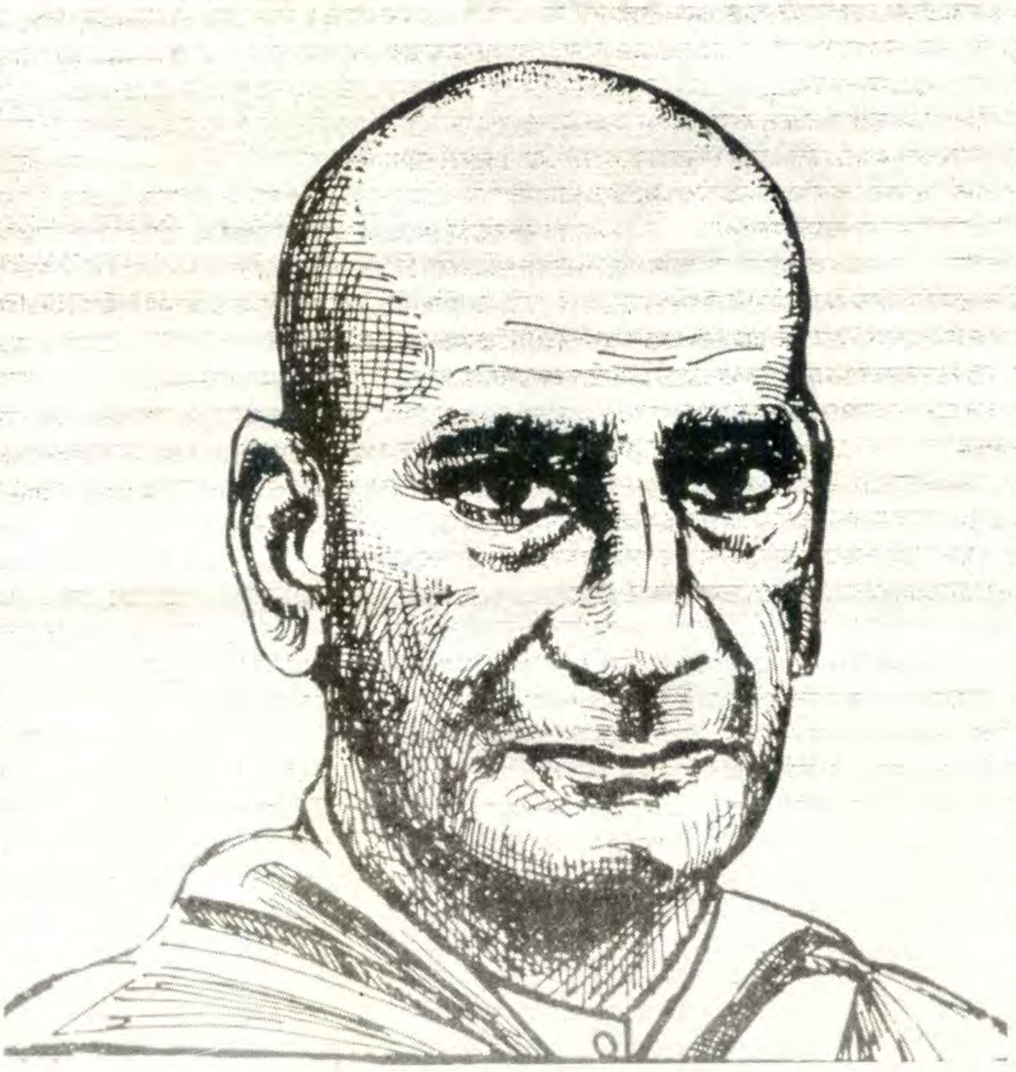

२३ दिसम्बर आर्यसमाज की रवपूर्ण विभूति श्रद्धेय स्वामी द्धानन्द जी महाराज का लिदान–दिवस है जो सारे आर्य गत् में समारोह पूर्वक मनाया एगा। अपने आचार्य तथा प्रवर्तक पश्चात् आर्यसमाज के संघटन एवं सार की दृष्टि से स्वामी श्रद्धानन्द ी का यशस्वी नाम आर्यसमाज के तिहास में प्रायः सर्वप्रथम स्थान खता है। उनका विशाल व्यक्तित्व, व्य कार्यक्षमता, अनुकरणीय त्याग था साहसपूर्ण नेतृत्व सभी कुछ मारे लिए ऐसा आदर्श रहा जिससे गों तक हमें प्रेरणा तथा स्फूर्ति लती रहेगी। आचार्य दयानन्द द्युत थे तो उनका शिष्य श्रद्धानन्द ानो एक विशाल यन्त्र था जो उससे चालित हो रहा था। महर्षि के श्चात् उनके मनोरथों को ार्यान्वित करने का उन्होंने बीड़ा ठाया। शिक्षा, समाजसुधार, देश की वाधीनता का आन्दोलन आदि सभी त्रों में उन्होंने मूर्त प्राप्ति का रूप ारण करके बहुत विपुल अभियान किये और सफलता ने उनके चरण मे। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल काँगड़ी जैसी संस्था उनकी ान्तिकारिणी क्षमता एवं प्रतिभा का सुदर प्रमाण है। स प्रयास के द्वारा गंगा के तट पर ही बैठ कर उन्होंने ुग गंगा के प्रवाह को बदलने का सफल प्रयोग किया। छूआछूत दूर करने के लिये सक्रिय पग उठाने के लिए ब महात्मा गान्धी जी तक अपेक्षित साहस न दिखा के तो स्वामी जी ने बहुत व्यापक स्तर पर इस बुराई के उन्मूलन के लिए तीव्र आन्दोलन चलाया। पीछे लकर यद्यपि महात्मा गान्धी ने भी इसी आन्दोलन को पने कार्यक्रम का मुख्य अंग बनाया परन्तु आर्यसमाज के आन्दोलन से महात्मा जी के आन्दोलन में यह ौलिक अन्तर रहा कि आर्यसमाज का आन्दोलन ानवीय भावनाओं पर ही आधारित था जबकि काँग्रेस के आन्दोलन के पीछे राजनैतिक स्वार्थ निहित थे। इस ाधार पर यह कहा जा सकता है कि आर्यसमाज के आन्दोलन का स्तर ऊँचा रहा। आर्य समाज ने अछूतों को गले लगाया केवल धार्मिक श्रद्धा के वशीभूत होकर और काँग्रेस ने उन्हें अपनाया तो उन्हें राजनैतिक सत्ता ाप्ति का साधन बनाया। आर्यसमाज ने अछूतों को तथाकथित सवर्णों के साथ आत्मसात् किया। अनेकों यक्ति इस वर्ग से आर्यसमाज के कार्यकर्ता तथा चारक बने और अन्य उपदेशकों की भाँति ही पंडित आदि शब्दों के सम्मान का उपभोग करते रहे। दूसरी ओर महात्मा जी ने उन्हें हरिजन नाम देकर पृथक् जाति या वर्ग के रूप में बनाये रखा। इससे काँग्रेस को तो संस्था के रूप में राजनैतिक लाभ अवश्य मिला, परन्तु वर्गीय पार्थक्य के गर्त से बाहर निकल कर विशाल समाज में एकाकार होने की इस वर्ग की आकांक्षायें बहुत सीमा तक धूमिल हो गईं। मानो औषध ने एक रोग को तो शान्त किया, परन्तु दूसरा रोग उभाड़ दिया। स्वामी श्रद्धानन्द की सरणि यदि उसी समय पकड़ी होती तो समस्या का यह नया विकराल रूप न बना होता।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि आंदोलन को भी जन्म दिया। यह आन्दोलन न केवल धार्मिक था, अपितु इसके पीछे राष्ट्रीय एकता की दूरदर्शिता भी काम कर रही थी। स्पष्ट था कि मुस्लिम तथा ईसाई मतों के प्रचार के नाम पर देश में राष्ट्रियता विरोधी तत्त्व तथा भावनायें पनप रही थीं। अंग्रेज शासक इन्हें अपने साम्राज्यवादी प्रयोजनों की सिद्धि के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। दूसरी ओर भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के नेता अपनी आरम्भिक दुर्बलताओं के कारण इन आंदोलनों के आगे झुकने में ही कल्याण समझते थे परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जैसा महारथी किसी लौकिक शक्ति का मुँह देखकर अपने आत्मा की पुकार को दबाने वाला न था। उन्होंने तथाकथित देशभक्त लोगों का रोष एवं क्षोभ मोल लेकर भी शुद्धि आन्दोलन को तीव्र किया। हजारों की संख्या में मुस्लिम व इसाई बने लोगों को पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित कर वैदिक संस्कृति का संजीवनी–पान शुद्धि आन्दोलन के माध्यम से कराया। उनका मानना था कि धर्मांतरण से मुस्लिम व ईसाई साम्प्रदायिकता को बल मिलेगा और धर्मांतरित होने वाले लोग साम्प्रदायिक राजनीति से ग्रसित होकर राष्ट्र की मुख्यधारा से विलग होकर स्वाधीनता संघर्ष में व्यवधान उत्पन्न करेंगे। मुस्लिम साम्प्रदायिकता मुस्लिम लीग के माध्यम से जो मांगे राष्ट्रीय मंच पर रख रही थी और कांग्रेस के कुछ मुस्लिम नेता जिन्हें मौन रह कर समर्थन दे रहे थे वे मांगें आगे चल कर भारत–विभाजन का आधार बनीं। इस खतरे को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने वक्त से पहले भांप लिया था। इसीलिए उन्होंने राष्ट्र के शरीर को क्षीण करने वाली इस मलिनता को धो डालने का संकल्प लिया था। उनका शुद्धि आन्दोलन राष्ट्रीय शरीर की शुद्धि का अभियान था। परन्तु दुर्भाग्य है हमारा और हमारे देश का कि स्वामी जी एवं आर्यसमाज के इस आन्दोलन का प्रवाह हिन्दुओं की संकीर्ण एवं राजनैतिक नेताओं की विवेकहीनता की बाधाओं ने अवरुद्ध कर दिया। काश ! राष्ट्र–मालिन्य के शोधन की यह विधि हमें हृदयंगम हो जाती तो देश को इस दुर्दशा का मुख न देखना पड़ता। जब स्वामी जी आगरा में शुद्धि कर रहे थे तो मुसलमान नेताओं के आग्रह पर काँग्रेस के शीर्षस्थ नेताओं ने स्वामी जी से मांग की कि शुद्धि आन्दोलन से दोनों सम्प्रदायों में द्वेष फैलता है, अतः आप इसे बन्द कर दें। स्वामी जी का उत्तर था–मैं अपने प्रचारक वापिस बुला सकता हूँ, यदि मुस्लिम नेता अपने प्रचारकों को वापिस बुला लें और यह वचन दें कि वे किसी हिन्दू को मुसलमान न बनायेंगे। परन्तु किस में साहस था कि मुस्लिम नेताओं से यह मांग मनवा सकें। यही नेता हमारे शुद्धि आन्दोलन का हिन्दू–मुस्लिम सौहार्द के नाम पर सदा विरोध करते रहे। स्वामी जी अपने मार्ग से विचलित होने वाले न थे। इसी राष्ट्रीय आन्दोलन की वेदि पर उनका गौरवपूर्ण बलिदान हुआ।

इसी बलिदान के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष यह समारोह मनाया जाता है, जो हमें एक विशेष सन्देश तथा स्फूर्ति देता है। महर्षि के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने जिस निमित्त प्राण दिए, आर्यसमाज उस कार्य की पूर्ति को अपना प्रमुख कर्तव्य समझे।

श्रद्धानन्द सदृश बन जाओ

-(प्रो. जनमेजय विद्यालंकार, एम. ए., शास्त्री)

रोम रोम में रमा हुआ था, जिनके ओ३म् नाम का राग।
नख से शिख तक पूर्ण हुआ था जिनके मातृभूमि अनुराग।।
अद्वितीय पावन था जिनका भव्य देह महिमा का धाम।
श्रद्धानन्द नाम था उनका उनको सौ-सौ बार प्रणाम।।

कान धन्य थे जिनने उनका सिंहनाद सुन पाया था।
बड़भागी थे नेत्र जिन्होंने दर्शन लाभ कमाया था।।
अहो धन्य वह मस्तक जिसने उनकी चरणधूलि पाई।
स्मरण शक्ति वह धन्य न जिसने कथा पुरानी बिसराई।।२।।

एक बार जो उनसे मिल ले धन्य धन्य हो जाता था।
कायरता सब छोड़ उसी क्षण महावीर बन जाता था।।
उनकी दयादृष्टि को पाकर सब निहाल हो जाते थे।
रोते रोते जो आते थे हँसते हँसते जाते थे।।३।।

उनके बल से सदा सुरक्षित रहता था यह देश महान्।
उनके ही दम से चमका था शिक्षा का प्राचीन विधान।।
अगर कहीं वह जीवित होते कभी न बनता पाकिस्तान।
विश्व शिरोमणि देश हमारा कहलाता इक हिन्दुस्तान।।४।।

कुछ तो सीखो त्याग तपस्या ऐ कविता पढ़ने वालो।
निर्भयता साहस कुछ सीखो भारत के रहने वालो।।
मुख से नहीं, आचरण से तुम ईश्वर पर विश्वास करो।
श्रद्धानन्द सदृश बन जाओ पुण्यकाम निष्काम करो।।

आजादी के दीवाने अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी एवं रोशन सिंह

– कु. भावना

शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश) निवासी पं. मुरलीधर तिवारी के यहाँ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष एकादशी विक्रमी सम्वत् १८८४ को राम प्रसाद बिस्मिल का जन्म हुआ। वे कचहरी में स्टाम्प बेचकर जीवन यापन करते थे। जब राम प्रसाद चौदह वर्ष के थे, तब उन्हें घर में चोरी करने, सिगरेट और भांग पीने तथा श्रृंगाररस पूर्ण उपन्यास पढ़ने की बुरी आदत पड़ गई। एक दिन नशे की हालत में पकड़े जाने से बुरी आदतें दूर हुई। परन्तु सिगरेट बहुत ज्यादा पीते थे। सहपाठी श्री सुशीलचन्द्र सेन के विशेष प्रयत्नों से यह बीमारी भी छूटी। समय बदला, रामप्रसाद बिस्मिल के धार्मिक संस्कार जागृत हुए। एक सज्जन की देखादेखी व्यायाम करने लगे। ब्रह्मचर्य पालन व नियमित व्यायाम करने से उनका शरीर बल्ष्ठि व बुद्धि तेज हो गई। मुंशी इन्द्रजीत की प्रेरणा से वे आर्य समाज के सम्पर्क में आए जो समाज सुधार व स्वतन्त्रता आन्दोलन में अग्रणी संस्था थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित 'सत्यार्थप्रकाश' के अध्ययन से तो उनका जीवन ही बदल गया। पर्यावरण शुद्धि व जनकल्याण के लिए वे 'यज्ञ' करते तथा विद्वानों की सेवा करते।

उन्होंने सर्वप्रथम शाहजहाँपुर में 'आर्यकुमार सभा' की स्थापना की। इसमें बच्चों व युवकों को देशभक्ति और समाज सेवा की प्रेरणा दी जाती थी। 'आर्य कुमार सभा' के अन्तर्गत युवकों को आत्मरक्षा व शस्त्र–शास्त्र का अभ्यास कराया जाता था। इसका साप्ताहिक अधिवेशन प्रत्येक शुक्रवार होता था। इसमें वाद–विवाद, भाषण व धार्मिक पुस्तकों का पठन–पाठन हुआ करता था। उन्होंने 'आर्य कुमार सभा' के अन्तर्गत अश्फ़ाक उल्ला खाँ, ठाकुर रोशन सिंह आदि अनेक देशभक्त नौजवान तैयार किये। भाई परमानन्द को फाँसी की सजा सुनकर उनके शरीर में आग लग गई। उन्होंने विचारा कि "अंग्रेज बड़े पापी हैं, इनके राज्य में न्याय नहीं, मैं इसका बदला अवश्य लूँगा।" जीवन भर अंग्रेजों के राज्य को विध्वंस करता रहूँगा। इस प्रकार की प्रतिज्ञा कर चुकने के पश्चात् वे सुप्रसिद्ध देशभक्त संन्यासी स्वामी सोमदेव जी से मिले, जो अपने भाषणों में जन–जागृति व आजादी के महान कार्य में जुटे हुए थे। अंग्रेजों के अत्याचारों के विरूद्ध उन्होंने क्रान्तिकारी युवकों का संगठन बनाया। इटावा के शिक्षक पं. गेन्दालाल दीक्षित उनके 'गुरु' थे। उनसे वे बन्दूक, पिस्तौल आदि शस्त्र चलाने सीखते। रामप्रसाद बिस्मिल ने अमेरिका को आजादी कैसे मिली, स्वदेशी रंग, क्रान्तिकारी जीवन, मन की लहर आदि पुस्तकें प्रकाशित कर क्रान्तिकारी दल के लिए धन की व्यवस्था की। किन्तु यह पर्याप्त न थी।

अंग्रेज सरकार भारतीयों पर हर तरह के जुल्म करती थी। अतः क्रान्तिकारियों ने निश्चय किया कि 'काकोरी रेलवे स्टेशन' के निकट रेलगाड़ी में सरकारी खजाने को लूटकर दल की गतिविधियाँ तेज की जाये। सभी साथियों ने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में मिलकर कार्य करने की शपथ ली। अन्ततोगत्वा काकोरी के करीब रेलगाड़ी खड़ी करके सरकारी खजाना रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह आदि मात्र दस क्रान्तिकारियों ने लूट लिया। इससे दस हजार रुपये उनके हाथ लगे। कार्यकर्ताओं को इससे बड़ा उत्साह मिला। यह धन स्वाधीनता संग्राम में व्यय होने लगा।

काकोरी डकैती के बाद पुलिस बहुत सचेत हो गई। दल के सदस्य बनवारी लाल के सरकारी गवाह बन जाने से क्रान्तिकारी संगठन को गहरा धक्का लगा। राजद्रोहात्मक साहित्य पकड़ा गया। काकोरी काण्ड में लिप्त सभी सदस्य पकड़े गये। केवल चन्द्रशेखर 'आजाद' ही थे, जो बन्दी न बनाये जा सके। क्रान्तिकारियों को अमानवीय यातनाएँ दी जाने लगी। अशफ़ाक उल्ला खाँ को गहरी पीड़ा पहुँचाई गई। दल के सदस्य राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी कलकत्ता से गिरफ़्तार किये गये। अंग्रेजों के जुल्मों का क्या कहना? किसी कवि ने कहा है –

देश हित वार दीं, अनेक ही जवानियाँ।
जिनके खून से लिखी, स्वदेश की कहानियाँ।।

अशफ़ाक उल्ला खाँ, रामप्रसाद बिस्मिल को बड़ा भाई मानते थे। अतः इसी लगाव के कारण ब्रिटिश सरकार उन्हें बिस्मिल का सहकारी मानती थी। अशफ़ाक को हर प्रकार से पीड़ा पहुँचाने के बाद अंग्रेजों ने उन्हें बहकाने के लिए मुसलमान पुलिस अफसर को भेजा। पर आजादी का दीवाना अशफ़ाक उल्ला खाँ तो सच्चा देशभक्त था, अपने कर्तव्य से विमुख न हुआ। वीरागणी रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन सिंह को जज ने फाँसी की सज़ा व शचीन्द्र बख्शी, केशव चक्रवर्ती, मुकन्दी लाल, मन्मथ लाल गुप्त को कालेपानी की कठोर यातनाएँ दी गई। १९ दिसम्बर, १९२७ को गोरखपुर जेल में उन्हें फाँसी पर लटकाने से पूर्व उनकी 'अन्तिम इच्छा' पूछी गई, जिसे सुनकर कर्मवीर पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने उच्च स्वर से कहा – 'अंग्रेजी साम्राज्य का नाश हो' यह मेरी अन्तिम कामनाह"। वेद के पवित्र मन्त्र व जोशीले गीत गाते हुए बिस्मिल और उनके साथियों ने हंसते हुए फाँसी के फन्दे चूम लिये और सदा के लिए अमर हो गए।

इन क्रान्तिकारियों ने दशवासियों से अन्तिम प्रार्थना करते हुए कहा था कि वे सुशिक्षित बनें तथा जो कुछ करें, सब मिलकर देश की भलाई के लिए करें। इसी में सबका भला है।

मरते बिस्मिल, रोशन लाहिड़ी, अशफ़ाक अत्याचार से।
होंगे सैकड़ों पैदा इनके खून की धार से।।

'अशफ़ाक मेरा सच्चा मित्र एक संस्मरण' नाम शीर्षक से पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने लिखा कि –

"मैंने तुमने एक थाली में भोजन किया। मेरे हृदय से वह विचार ही जाता रहा कि हिन्दू–मुसलमान में कोई भेद है। तुम मुझ पर अटल विश्वास तथा अगाध प्रीति रखते थे। हाँ! तुम मेरा नाम लेकर पुकार नहीं सकते। तुम मुझे सदैव 'राम' कहा करते थे। एक समय जब तुम्हारे हृदय कम्प दौरा हुआ, तुम अचेत थे, तुम्हारे मुँह से बारम्बार 'राम', 'आय राम' शब्द निकल रहे थे। पास खड़े हुए भाई बन्धुओं को आश्चर्य था कि 'राम–राम' की रट थी। उस समय किसी मित्र का आगमन हुआ, जो 'राम' के भेद जानते थे। तुरन्त मुझे बुलाया गया। मुझसे मिलने पर तुम्हें शान्ति हुई, तब सब लोग 'राम–राम' के भेद समझे।"

बिस्मिल ने जेल में फाँसी से ३ दिन पूर्व दिल को हिला देने वाली आत्मकथा में यह लिखा है – "अशफ़ाक! तुम्हारे दिल में मुल्क की खिदमत करने की इच्छा थी। तुम मेरे छोटे भाई जैसे हो गये। सबको आश्चर्य था कि एक कट्टर आर्यसमाजी और मुसलमान का मेल कैसा? तुम एक सच्चे मुसलमान थे और और सच्चे देशभक्त भी। तुमने हमेशा चाहा कि मुसलमानों की खुदा अक्ल दे कि वे हिन्दुओं के साथ मिलकर हिन्दुस्तान की भलाई करें...... मैंने, अशफ़ाक! अपना तन–मन–धन सब मातृसेवा में अर्पण करके तुम जैसे अपने प्यारे मित्र को भी मातृभूमि की भेंट चढ़ा दिया।"

INDIAN ISLAHI CENTER HOSTS 'PEACE CONFERENCE'

A unique platform in Kuwait organized by Indian Islahi Center (IIC) with a caption of 'Peace Conference' proclaimed to attain world peace by exchanging the doctrine of peace and stability of 'Vedas.'

The conference discussed at large how to attain world peace by influencing the themes and ideology of Vedas. The world as a whole is confronting various atrocities nowadays, which shall be nullified by the influence of Vedas. The conference unanimously demonstrated that the prime ideology of Vedas is one and the same as the creator and sustainer of the universe is one and the same. The followers of Vedas should lead an exemplary life to fan out the real theme of Vedas, then only the sectarian violence, brutalities, aggressions, terrorism, extremism etc shall be obliterated from the society in general.

Swamy Agnivesh (DELHI), a world renowned inter-faith scholar, social worker, peace promoter and an exemplary "Swamiji" in ideal life, who was the chief guest and prime orator of the conference explained that the above theme is inevitable for a peaceful world. The ambassador of India, the delegates of other organizations and dignitaries in Kuwait, unanimously enjoyed the speech of swamiji for a peaceful world and the swamiji also expressed his deep bliss for the innocent efforts of the intellectual team of IIC Kuwait as well as the other organizations for their cooperation to establish peace in the world.

Dr Hussain Madavoor, a prevalent scholar and all India leader of Islahi Movement, also narrated the role of Vedas especially the last revelation of almighty to solve the issues of human being with a stable, satisfied and peaceful life in the world.

The Ambassador of India, Sunil Jain inaugurated the conference and stressed the necessity of teaching the ideology of Vedas for a peaceful world and also appreciated the Indian Islahi Center for their unique role and apt involvement in the peace conference and also for the overall development of Indian Society in General.

Kuwait Awqaf and Islamic Affairs undersecretary Dr Adil Falah stated in his felicitation speech, that the peace mission of Islam and other Vedas has to be exchanged with a common manifesto like peace conference is very much necessary in this disturbed world and extended his support and wishes to IIC and admired the Amir of Kuwait for his inevitable intelligence for the world peace and also stability and fraternity among all walks of life in Kuwait.

Reverend Fr Abypaul of Kuwait Syrian Church & Jb Basheer Patelthazham, a scholar in interfaith dialogue, also addressed the audience to work cordially among all walks of life to establish peace and stability and also appreciated the organizers with a request to arrange more platforms.

The respected delegates of different organizations in Kuwait namely, Sharafuddin Kannoth, Apsara Mahmoud, Siddiq Valiyakath, M T Mohammad, Hamza Payyannur, Rafi Nandi, Joy Mundakath, Suresh Mathur, Shabir Mundoli, Biju Stephan, SAP Azad, Sattar Kunnil, Abdulfatah Tayyil, Munir Ahmad, Mohammad Riyas, N A Munir, Mohammad Ali Matra, Preethimon, Abraham Kunnil, A K Johnson also shared the venue with their support and appreciation to Indian Islahi Center.

IIC President Eng. Anwar Sadat presided the function, IIC Gen Secretary Abdulaziz Salafi conveyed welcome speech, Firoz Chungathara, Sayed Abdulrahman Thangal, Zayed Mohamed Rafeeq and others spoke to the audience. Mohamed Rafeeq Quilandi recited holy Quran verses to open the summit in the name of Almighty God.

आर्य समाज की गतिविधियाँ

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान तथा वैदिक विरक्त मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में 15 से 22 जनवरी, 2016 तक राजस्थान में निकाली जायेगी

विशाल जन-चेतना यात्रा

जयपुर से प्रारम्भ होकर दौसा, भरतपुर, अलवर, सीकर, चुरू व झुंझूनु जिलों से होकर गुजरेगी जन चेतना यात्रा

गौहत्या, नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, अश्लीलता, धार्मिक पाखण्ड, किसानों की दुर्दशा एवं वर्तमान दूषित शिक्षा प्रणाली जैसे ज्वलन्त मुद्दों पर लोगों को किया जायेगा जागरूक

यात्रा का नेतृत्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी करेंगे

समाज में व्याप्त सामाजिक बुराईयों को जड़मूल से र्मूलन करने के लिए राजस्थान में जन-चेतना यात्रा निकालने ा निर्णय लिया गया है। यह यात्रा आर्य प्रतिनिधि सभा जस्थान तथा वैदिक विरक्त मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में ायोजित की जायेगी। इस ऐतिहासिक यात्रा का नेतृत्व ार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा कार्यकारी धान एवं राजस्थान के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री सत्यव्रत सामवेदी ी करेंगे। इस यात्रा के माध्यम से समाज में व्याप्त सामाजिक ुराईयों नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, गोहत्या, अश्लीलता, धार्मिक पाखण्ड, किसानों की दुर्दशा वर्तमान दूषित शिक्षा प्रणाली, महिला उत्पीड़न तथा भ्रष्टाचार आदि के विरुद्ध आम जनता को जागरूक किया जायेगा। राजस्थान में निकाली जाने वाली यह जन चेतना यात्रा जयपुर से प्रारम्भ होकर दौसा, भरतपुर, अलवर, सीकर, चुरू तथा झुंझनू जिलों से होकर गुजरेगी। इस यात्रा में स्थान-स्थान पर सार्वजनिक सभाएं कर लोगों को सामाजिक बुराईयों से अवगत कराया जायेगा तथा इन्हें दूर करने के लिए एकजुटता स्थापित की जायेगी।

इस यात्रा में भारी संख्या में संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें, कार्यकर्ता तथा आर्य समाज के प्रतिष्ठा प्राप्त भजनोपदेशक सम्मिलित रहेंगे।

इस ऐतिहासिक यात्रा की तैयारी के लिए 21 सदस्यीय संयोजन समिति का गठन राजस्थान सभा के प्रधान श्री हवासिंह आर्य एडवोकेट की अध्यक्षता में किया गया है। जो सज्जन इस यात्रा में सम्मिलित होना चाहते हैं वह अभी से मन बना लें तथा अपनी तथा अपने साथियों की स्वीकृति हमें शीघ्र भिजायें। यात्रा के लिए आर्थिक सहयोग तथा यदि वाहन है तो अपना वाहन डीजल सहित देकर पुण्य के भागी बनें।

ग्रन्थ विमोचन एवं सम्मान समारोह

प्रो. डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया जी द्वारा न्दी में लिखित एवं श्री हरवंशलाल ोहली जी द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित स्तक "शून्य से शिखर तक स्वामी द्धानन्द" नामक पुस्तक का विमोचन ी आनन्द कुमार चौहान डायरेक्टर मिति शिक्षण संस्थान तथा ए. के. सी. ग्रुप ॉफ कम्पनी के कर-कमलों से आर्य माज रामकृष्णपुरम् सैक्टर-9, नई दिल्ली में रविवार दिनांक 1 नवम्बर, 2015 ो हुआ। यह भव्य कार्यक्रम भारतीय हिन्दू द्धि सभा के तत्वावधान में तथा आर्य समाज मकृष्णपुरम् सैक्टर-9 के सहयोग से हुआ। ार्यक्रम का प्रारम्भ प्रातः यज्ञ से हुआ और ोइम् ध्वज श्रीमती संजना चौधरी जी (प्रभारी र्गावाहिनी) के द्वारा फहराया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती मृदुला ौहान जी द्वारा की गई। भजन-संगीत के श्चात् आमंत्रित विद्वानों ने स्वामी श्रद्धानन्द ी के जीवन पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत िये। जिनमें स्वामी श्रद्धानन्द जी (पलवल), ॉ. महेश विद्यालंकार जी, प्रो. सुन्दर लाल थूरिया जी, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, डॉ. निल आर्य आदि थे।

इस अवसर पर इस ग्रन्थ के लेखक डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया एवं अनुवादक श्री हरवंश लाल कोहली जी को माल्यार्पण, शॉल एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी का चित्र भेंट कर सम्मानित किया गया। इन्हीं के साथ सर्वश्री रामनाथ सहगल, श्रीमती उमा बजाज, विजय बत्रा, सुभाष चांदना, चन्द्रभान चौधरी, रवि चौधरी, प्रो. शशि तिवारी, श्रीमती ललिता निझावन आदि को भी सम्मानित किया गया।

अभ्यागतों का स्वागत श्री सूर्यपाल सिंह तथा कार्यक्रम का संचालन श्री चतर सिंह नागर ने किया। अन्त में सभी का धन्यवाद श्री नरेन्द्र मोहन बलेचा महामंत्री शुद्धि सभा ने किया। ऋषि लंगर के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

— बनवारीलाल, कार्यालयाध्यक्ष, शुद्धि सभा

आर्य समाज जवाहरनगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जवाहरनगर का वार्षिकोत्सव 26 से 29 नवम्बर, 2015 को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पं. बालकृष्ण जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में मंगल यज्ञ किया गया। उत्सव का कार्यक्रम प्रातः व रात्रि चला जिसमें यज्ञ के अतिरिक्त पं. सुखपाल जी के मनोहर भजन एवं डॉ. सोमदेव जी शास्त्री के उत्तम प्रवचन हुए। उत्सव का संदेश देते हुए डॉ. सोमदेव जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने वेद के सही अर्थों को समझाकर सभी धर्मों के लोगों को जोड़ने का प्रयास किया। स्वामी जी द्वारा स्थापित आर्य समाज सभी अन्धविश्वासों, पाखण्डों को तथा सभी प्रकार के भेद भावों को मिटा मानव जाति को एकसूत्र में बांधने का निरन्तर प्रयास कर रहा है, हमें इस कार्य में अपना सहयोग अवश्य देते रहना चाहिए। ध्वजारोहण श्रीमती अनुपमा एवं श्री राजीव गुप्ता जी द्वारा किया गया। इस उत्सव में खालसा कॉलेज फॉर वूमैन लुधियाना की पांच छात्राओं को बी.ए. फाइनल की परीक्षा में संस्कृत विषय में अपने महाविद्यालय में प्रथम पांच स्थान प्राप्त करने पर श्रीमती सुमित्रा देवी जी बस्सी द्वारा आरक्षित राशि से पारितोषिक एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। लुधियाना जिला की सभी आर्य समाजों व नगर के अन्य प्रतिष्ठित महानुभाव इस उत्सव में सम्मिलित हुए।

— विजय सरीन, प्रधान

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक छपकर तैयार

— लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या-256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/- रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान — सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

दूरभाष :-011-23274771, 23260985

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

राजा वरुण सब-कुछ जानता है

यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निळायं चरति यः प्रतंकम्।
द्वौ सन्निषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद् वेद वरुणस्तृतीयः।।

—अथर्व० ४/१६/२

ऋषिः—**ब्रह्मा**।। देवता—**वरुणः**।। छन्दः—**त्रिष्टुप्**।।

विनय—पाप से वास्तव में डरने वाले मनुष्य संसार में विरले ही होते हैं। प्रायः लोग पाप करने से नहीं डरते, किन्तु पापी समझे जाने से डरते हैं। जहाँ कोई देखने वाला न हो वहाँ अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाना, कोई पाप कर लेना, साधारण बात है। पाप व अपराध कर्म से बचने की कोई कोशिश नहीं करता; कोशिश तो इस बात की होती है कि हम वैसा करते हुए कहीं पकड़े न जाएँ। यही कारण है कि मनुष्य अपने बहुत–से कार्य छिपकर अकेले में करने को प्रवृत्त होता है, परन्तु यदि उसे इस संसार के सच्चे, एकमात्र राजा वरुणदेव की जानकारी हो तो वह ऐसे घोर अज्ञान में न रहे। यदि उसे मालूम हो कि वे जगत् के ईश्वर वरुण भगवान् सर्वव्यापक और सर्वद्रष्टा हैं तो वह पाप के आचरण करने से डरने लगे; वह एकान्त में भी कभी पाप में प्रवृत्त न हो सके। यदि हम समझते हैं कि हम कोई काम गुप्त रूप में कर सकते हैं तो सचमुच हम बड़े धोखे में हैं। उस सर्वद्रष्टा, सर्वव्यापक वरुण से तो कुछ भी छिपाकर करना असम्भव है। जब हम दो आदमी कोई गुप्त मन्त्रणा करने के लिए किसी अँधेरी–से–अँधेरी कोठड़ी में जाकर बैठते हैं और सलाहें करने लगते हैं, तो यद्यपि हम समझ रहे होते हैं कि हम दोनों के सिवाय संसार में और कोई इन बातों को नहीं जानता, तथापि इन सब बातों को वह वरुण देव वहीं तीसरा होकर बैठा हुआ सुन रहा होता है। यदि हम वहाँ से उठकर किसी किले में जा बैठें, या किसी सर्वथा निर्जन वन में पहुँच जाएँ तो वहाँ पर भी वह वरुणदेव तो तीसरा साक्षी होकर पहले से बैठा हुआ होता है। उससे छिपाकर हम कुछ नहीं कर सकते। यदि हम दूसरे किसी आदमी को भी कुछ नहीं बताते, केवल अपने ही मन में कुछ सोचते हैं, तो वह वरुण उसे भी जानता है, सब सुनता है। हमारे चलने या ठहरने को, हमारी छोटी–सी–छोटी चेष्टा को वह जानता है। जब हम दूसरों को धोखा देते हैं, ठग लेते हैं और समझते हैं कि इसका किसी को पता नहीं लगा, तब हम स्वयं कितने भारी धोखे में होते हैं। क्योंकि, उस वरुण को तो सब–कुछ पता होता है और हमें उसका फल भोगना पड़ता है।

शब्दार्थ—यः तिष्ठति, चरति=जो मनुष्य खड़ा है, या चलता है, **यः च वञ्चति**=जो दूसरों को ठगता है **यः निलायं चरति**=जो छिपकर कुछ करतूत करता है **यः प्रतंक चरति**=जो दूसरों को भारी कष्ट आदि देकर अत्याचार करता है और **द्वौ सन्निषद्य**=जब दो आदमी मिलकर, एक–साथ बैठकर, **यत् मन्त्रयेते**=जो कुछ गुप्त मन्त्रणाएँ करते है। **तत्**=उसे भी **तृतीयः**=तीसरा होकर **वरुणः राजा**=सर्वश्रेष्ठ सच्चा राजा परमेश्वर **वेद**=जानता है।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में सर्वात्मना समर्पित आर्य भजनोपदेशकों का अद्भुत समागम

दिनांक : शुक्रवार 1 जनवरी, 2016 से रविवार 3 जनवरी, 2016 तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम ग्राम टिटौली, जिला–रोहतक, हरियाणा

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् का सम्मेलन आयोजित

देश के विभिन्न प्रान्तों से सैकड़ों आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं

इस ऐतिहासिक अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में पधारकर आर्यजन कार्यक्रम का आनन्द लें। ऐसा अवसर आपके जीवन में दुबारा नहीं आयेगा जब इतनी संख्या में आर्य भजनोपदेशक एकत्रित हों और उनका कार्यक्रम सुनने को मिले।

सर्व सज्जनों को सूचित करते हुए हमें अत्यधिक हर्ष हो रहा है कि आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में समर्पित भाव से कार्य कर रहे समस्त आर्य भजनोपदेशक एवं आर्यभजनोपदेशिकाओं के संगठन भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् का महत्त्वपूर्ण सम्मेलन 1 जनवरी, 2016 से 3 जनवरी, 2016 तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा) में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान व स्वामी इन्द्रवेश फाऊण्डेशन के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन में सैकड़ों आर्य भजनोपदेशक भाग लेंगे तथा तीनों दिन भजनों का शानदार कार्यक्रम चलता रहेगा। यह सम्मेलन आर्य भजनोपदेशकों का अद्भुत समागम होगा और आपको इतनी बड़ी संख्या में आर्य भजनोपदेशकों को पहली बार देखने व सुनने का अवसर मिलेगा। इस अवसर पर वयोवृद्ध आर्य भजनोपदेशकों को सम्मानित भी किया जायेगा। अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम का आनन्द लें।

नोटः स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम पहुंचने के लिए माता दरवाजा या जीन्द बाईपास रोहतक से टिटौली के लिए बस एवं टैम्पो हर समय मिलते हैं। आश्रम टिटौली से खिडवाली रोड पर स्थित है।

निवेदक

सत्यपाल मधुर	कैलाश कर्मठ	नरेशदत्त आर्य	ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य	प्रवेश आर्या	आचार्य सन्तराम
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष	संयोजक	व्यवस्थापक	स्वागताध्यक्ष
भा.आ.भ. परिषद्	भा.आ.भ. परिषद्	भा.आ.भ. परिषद्			

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)

दूरभाष :– 0–9354840454, 01262–286999, 286900

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।